Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life

1
2018

VOL. 148

Founder's Essay

अभ्यास जो देवों और बुद्धों के साथ गुंजायमान है

मध्यशीतकाल के सूत्र पाठ का प्रारंभ हो गया है। शीतऋतु के मध्य के सबसे अधिक सर्दी की हर सुबह उषा-काल के पूर्व के अन्धेरे में हम जल्दी जल्दी धर्मकेन्द्र पहुँचकर पूरे मन से सूत्रपाठ करते हैं।

जब हमारा पाठ समाप्त हो जाता है, हमारी भावना, शरीर का अंग अंग चित्त से मन तक, शुद्ध विशुद्ध हो जाती है। यह पवित्रता का भाव ही है जो ऐसी मन:स्थिति पैदा करता है जो देवों और बुद्धों के साथ गुंजायमान होता है और उनकी प्रतिक्रिया आमंत्रित करता है।

अब और वीसवीं शताब्दी के अन्त तक के दशक के अन्तराल में जिस तरह प्रार्थना करना जारी रख रहें हैं और जिस तरह से हम अपना आचरण रख रहे हैं, वह एकीसवीं शताब्दी की दुनिया को बदल देगा, जिसमें हम अपने को मिला लेंगे। कोई बात नहीं, कैसी भी बड़ी समस्यायें होगीं उनका अवश्य समाधान निकलेगा, वह समाधान का मार्ग अवश्य दृष्टि में आयेगा, यदि हममें से सभी आध्यात्मिक आचरण का पालन करने का प्रारंभ करते हैं, वह सचमुच में बदल देगा।

आध्यात्मिक आचरण से हम अपने स्वार्थपरक इच्छाओं और तुच्छ अहंभाव पर नियंत्रण पा लेते हैं जो आसानी से हमें बदल देता है।एक एक कर हमारे संगी-साथियों की संख्या बढ़ेगी जिन्हें ईमानदारी से देवों एवं बुद्धों के ज्ञान को प्राप्त करने की कामना है।आज हमारा यह महत्वपूर्ण कर्तव्य है। मैं आशा करता हूँ कि इस वर्ष के मध्यशीतकाल के सूत्र पाठ में आप सब अपने आप को समर्पित और अपने विश्वास का नवीनीकरण करें।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co.), pp. 16–17

Living the Lotus
Vol. 148 (January 2018)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Eriko Kanao
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

President's Message

जीवंत और उत्साह से जीना

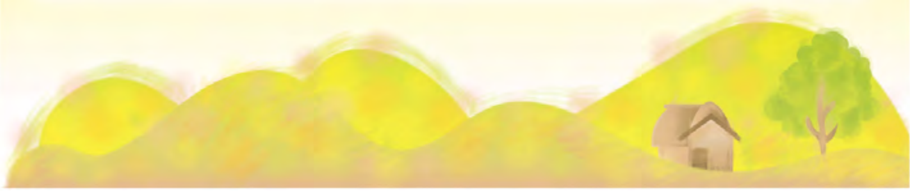

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

अपने आप को प्रकाश बनाओ

वर्ष के पहले दिन के प्रात: को गानतान कहा जाता है और तान के लिए चीनी कैरेक्टर सूरज की उपस्थिति जैसा दिखता है क्योंकि यह क्षितिज से ऊपर आ जाता है। नव वर्ष के प्रात: की तेज धूप से शुरू होता है नव वर्ष जो हमारे शरीर और मन को ताजा और सशक्त बनाता है और जिसका हम स्वागत करते हैं।

ठीक है, आप सभी ऐसे प्रारंभ के साथ इस वर्ष में कैसे जीने की आशा करते हैं?

मुझे लगता है कि हम सभी के पास अपने विचार और अपनी उम्मीदें हैं, लेकिन एक बात जो हम सभी में समान है, वह हमारी इच्छा है कि वर्ष प्रसन्नता में और उत्साह से भरा रहे।

ऐसा हो इसके लिए, कुछ है जिसे हमें अवश्य ही नहीं भूलना चाहिए।अर्थात्, सूर्य की तरह, जो हमें जीने की शक्ति देता है, हम स्वयं आनन्द में और उत्साह से भरे रहें, जिससे कि हम अन्य लोगों को शांतिपूर्वक रहने में और उनमें उल्लास लाने में सहायक बन सकें। कभी कभी, किसी व्यक्ति को दूसरों से प्रोत्साहन मिलता है या फिर किसी अन्य व्यक्ति को आनन्द में देखकर शांति मिलती है। लेकिन, मुझे लगता है, सबसे महत्वपूर्ण यह है कि स्वयं के बदौलत ही जीवन में यह चमकदमक और उत्साह आता हैं।

हालाँकि, ऐसे कुछ लोग हैं जो आह भरते और कहते हैं, त्यागपत्र के साथ हंसमुख रहना मुश्किल है, जब तक कि आप सूर्य स्वभाव के साथ पैदा नहीं होते हैं। फिर भी, आपको कभी कोशिश करना नहीं छोड़नी चाहिए।

बौद्ध धर्म में एक देशना है, “स्वयं को प्रकाश बनाओ, धर्म को अपना प्रकाश बनाओ।.”

“स्वयं को प्रकाश बनाओ” का अर्थ है कि स्वयं के प्रकाश में अपना जीवन जीना चाहिए, इसका अर्थ है कि आपके पास रीढ़ की हड्डी है जो एक दृढ़ आत्मविश्वास से पूर्ण जीवन शैली का नेतृत्व करना संभव बनाता है। और यह रीढ़ अटल विश्वास है जिसके योग से सभी लोग, स्वयं आप का भी, यहाँ और अब, अनमोल, अद्वितीय जीवन जी रहे हैं, जबकि आप जो जीवन जी रहे हैं, उसके लिए आपकी कृतज्ञता आपके लिए आवश्यक तेल है जो उस दीप को प्रज्वलित रखता है जो आपकी “रीढ़ की हड्डी” के रूप में है।

धर्म को अपना प्रकाश बनाओ

एक बार, एक जेन पुजारी था जो "बेपैर का पुजारी" कहलाता था। जब 1945 में युद्ध समाप्त हुआ, वह पच्चीस वर्ष का था और कोरियाई प्रायद्वीप पर तैनात था। वहाँ से उसे साइबेरिया में एक नज़रबन्दियों के कैंप में भेज दिया गया, जहाँ उनके दोनों पैर हिमदाह से बेकार हो गये, और उन्हें घुटनों से नीचे काट दिया गया। जापान लौटने से पूर्व, ऐसे विकलांग व्यक्ति की कठिनाइयों की और छब्बीस की आयु में जापान लौटने के बाद जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उनकी कल्पना करना मुश्किल था। हालाँकि, जब वह व्यक्ति रेवरेन्ट डोयू ओज़ावा हो गये, वे सत्ताइस वर्ष के थे। उन्होंने जो अनुभव किया उसका वर्णन अपने दिमाग में "प्रकाश की चमक" के रूप में किया। उन्होंने महसूस किया कि "मैं पीड़ित हूँ क्योंकि मैं अन्य लोगों से तुलना करता हूँ;" उन्होंने अपने विचारों को इस रूप में व्यक्त किया।

"सत्ताईस वर्ष पूर्व मेरे जन्म के साथ मेरे दिमाग की उत्पत्ति है जो ऐसी तुलना करता है। मैं सोचना छोड़ दूँगा कि मैं सत्ताईस वर्ष पूर्व पैदा हुआ था और आज मैं जैसा हूँ: बेपैर का एक व्यक्ति, आज को अपना जन्मदिन बनाऊँगा। आज पैदा हुआ व्यक्ति पूरी तरह से नया है, इसलिए मैं आज ही पैदा हुआ हूँ!"

उस दिन से, उनका यह आदर्श वाक्य था, "मैं आज ही पैदा हुआ हूँ।" इसलिए उन्होंने ध्यान में रखा कि वे हमेशा खुश रहें और धन्यवाद देकर अपना आभार व्यक्त करें। वह एक दयालु चेहरे के साथ बुद्ध मार्ग पर चलकर जीवन को आगे बढ़ाने के लिए सक्षम था।

जीवंत और प्रफुल्लित जीवन जीने के हेतु हमारे लिए महत्वपूर्ण यह है कि हम अपनी रीढ़ की हड्डी के रूप में सेवा करने का निर्धारण करें, चाहे हम सूर्य स्वभाव का या भाग्यशाली परिवेश में पैदा हुए या नहीं हुए हैं। हम बौद्धों के लिए यह बुद्ध धर्म है, क्योंकि ज़ेन पुजारी ओज़ावा हमें इतना स्पष्ट रूप से दिखाते हैं। इसका अर्थ है, धर्म के साथ अपने दीपक के प्रकाश के रूप में रहना है - "धर्म को अपना प्रकाश बनाओ।"

एक अलग परिप्रेक्ष्य से इसे देखकर हम यह कह सकते हैं कि जब हम पीड़ा और कठिनाई के दाह को भूलते हैं, तब जीवन में उजाला और उत्साह आता है और पीड़ और कठिनाई के दाह को भूलने के लिए अपनी रीढ़ की हड्डी के समान निर्धारित सेवा महत्वपूर्ण तरीका है, जैसा कि अभी उल्लेख किया गया है, साथ ही अपने मन पर ध्यान केंद्रित रखने का और व्यर्थ विचारों में नहीं खोने का संकल्प लें।

हायकु कवि क्योशी ताकाहामा (1874-1959) ने इस सशक्त नववर्ष की कविता में लिखा है: "जैसा कि वर्ष बदलता है / हम सब भी बदलते हैं / तभी हम आगे बढ़ते हैं।" जैसा कि यह कविता हमें बताती है, हममें से प्रत्येक अपने आप का नवीकरण करें और स्वच्छ मन और शुद्ध हृदय के साथ, वर्ष को उमंग और उत्साह से गुजारने के लिए उत्सुक रहें।

From *Kosei*, January 2018.

The Sutra of the Lotus Flower
of the Wonderful Dharma
Chapter 4: Faith and Understanding

धनी पिता और गरीब पुत्र का दृष्टान्त

एक लड़का एक धनी घर में पैदा हुआ था। जब छोटा था, वह घर से भाग गया। दूसरे देश में घूमता रहा और कई वर्षों से गरीबी में बिता रहा था। पिता एकमात्र पुत्र के भाग जाने से बहुत दु:खी था और अपने पुत्र की पूरे देश में खोज की। फिर भी पिता पुत्र का पता नहीं पा सका और एक दूसरे नगर में जा बसा और एक भव्य भवन में रहने लगा। वहाँ उसके साथ अनेक नौकर चाकर थे। पचास वर्ष की आयु पहुँचने तक, वह यों ही इधर उधर भटकता रहा और अनायास ही अपने पिता के नगर में पहुँच गया। अनजाने में ही वह अपने पिता के घर के द्वार के सामने खड़ा था। उसने फाटक के अंदर झाँक कर देखा कि सबकुछ बहुत ही सुंदर और विस्मित करनेवाली थीं। उसने सोचा, “यदि मैं यहाँ बहुत लंबे समय तक रहता हूँ, तो मैं पकड़ लिया जाऊँगा और काम करने के लिए मजबूर किया जा सकता हूँ या इससे भी बदतर हो सकता है।” और वह वहाँ से भाग गया।

इन वर्षों के दौरान, पिता का एक दिन भी अपने खोए पुत्र की सोच के बिना नहीं गया था। घर के अंदर से ही उसने पहली नज़र में पहचान लिया कि गेट पर खड़ा आदमी उसका पुत्र था। यह देखकर चकित हुआ कि उसका पुत्र अचानक भाग गया। उसने कुछ नौकरों को उसको वापस लाने को भेजा। जब नौकरों ने उसे पकड़ा, तो वह बहुत डर गया और बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। दूर से यह देखकर, पिता ने पुत्र को बलपूर्वक वापस लाने का फैसला छोड़ दिया।फिर उसने दो नौकरों को अस्त व्यस्त दशा में पुत्र से बात करने के लिए भेजा। उन दोनों ने अमीर वृद्ध के घर पर फावड़े से गोबर हटाने का काम करने का प्रस्ताव रखा और वह राजी हो गया। और निश्चिन्त होकर काम करना प्रारंभ किया। अमीर पिता ने पुत्र के नजदीक पहुँचने के लिए जानबूझकर अपने शरीर को कीचड़ और धूल से लपेटकर मजदूरों के साथ काम किया। उसने पुत्र से कहा, “मैं तुम्हारे पिता जैसा हूँ,” और उसे एक नया नाम दिया। बीस वर्ष तक, पुत्र ने गोबर को हटाना और गंदगी साफ करना जारी रखा।

बीस वर्ष के कामकाज के अंत तक, पुत्र अमीर पुरुष के घर में आराम से काम कर रहा था। फिर भी, उसकी दीनहीन मानसिकता अभी भी बनी रही। आखिरकार, बृद्ध बीमार हो गया और यह जानकर कि उसकी मृत्यु आसन्न है, उसने अपने पुत्र को गोदाम के प्रबंध का भार सौंप दिया, जिसमें उसका समपूर्ण कोष था। थोड़े समय में, वह अपने पिता के पूरे घर और उनकी सारी संपत्ति से परिचित हो गया और उसे पिता के घर का प्रबंध करने की अपनी क्षमता पर भरोसा आ गया। अन्तत: पिता पुत्र के आध्यात्मिक प्रगति से आश्वस्त हुआ और यह जानकर कि उनका अंत निकट है, उसने घर के सभी सदस्यों को इकट्ठा कर घोषित किया, “यह व्यक्ति मेरा औरस पुत्र है, और जो धन मेरे पास हैं मेरे पुत्र का है।” अनपेक्षित रूप से अपरिमित कोषों को प्राप्त कर पुत्र उस प्रसन्नता से भरा हुआ था जिसका उसने कभी पूर्व में अनुभव नहीं किया था, “मैंने कभी इस धन को प्राप्त करने की कामना नहीं की थी, परन्तु यह मेरे पास अनायास ही आ गया है।”

अमीर पिता बुद्ध का प्रतीक है और गरीब पुत्र हम मानव प्राणियों का प्रतीक है। हम बुद्ध से दूर चले गए हैं और मानवीय दुःखों की परिधि में बिना किसी उद्देश्य के भटक रहे हैं। फिर भी हम स्वेचछा से अनजाने ही अपने माता-पिता, बुद्ध, के निकट जा रहे हैं। इसका कारण है कि हम बुद्ध स्वभाव से संपन्न हैं, भले ही हम इससे अनजान हैं। जब बुद्ध से हम मिले, उन्होंने तत्क्षण हमें अपने बच्चों के रूप में पहचाना। वे सदा हमारे बारे में सोच रहे हैं । बुद्ध शीघ्रातिशीघ्र हमें ज्ञान की ओर प्रवृत्त कराने की कोशिश करते हैं, लेकिन हम बुद्ध से मुख मोड़ लेते हैं, यह सोचकर कि बुद्ध का ज्ञान बोध कुछ ऐसा नहीं है, जिसे अपनाने का भी सोच सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्ध उपायकौशल्य का प्रयोग करते हैं जिससे कि हम इस तरह उनके करीब रहें और हमें सहजता का अनुभव हो। “गोबर हटाना” इस तथ्य का प्रतीक है कि हमने अपने भ्रम को दूर करने का अभ्यास जारी रखा है।

गरीब पुत्र ने बीस वर्ष तक विवेक से अभ्यास जारी रखा, लेकिन वह अभी भी अपनी हीन मानसिकता को दूर नहीं कर पा रहा था। बुद्ध ने ठीक ही कहा, “मैं तुमहारे पिता के समान हूँ, इसलिए मैं तुमको एक नया नाम देता हूँ,” उसने अपने और बुद्ध के बीच स्पष्ट अंतर बनाया। कई वर्षों के अभ्यास के परिणामस्वरूप, गरीब पुत्र पिता के भंडार (बुद्ध की शिक्षाओं) से परिचित हो गया है और भंडार का प्रबंधक बन गया है, लेकिन वह यह नहीं सोचता कि धन उसका है। दृष्टान्त में गरीब बेटे की तरह, हम यह नहीं पहचान पाए कि हमारे पास खजाना है, अर्थात बुद्ध-स्वभाव है।

देशनाओं के अभ्यास के माध्यम से, हमारा आत्मविश्वास धीरे-धीरे बढ़ेगा। अब बुद्ध हमें कहते हैं कि “सभी जीवित प्राणी मेरे बच्चे हैं, और मैं उनका पिता हूँ। सभी जीवित प्राणी बुद्ध हो सकते हैं।” अंत में, हमें यह पता चला है कि हम बुद्ध के साथ हैं।

हमने पहले ही पुण्डरीक सूत्र का सामना हुआ है। इसलिए हम बुद्ध के करीब तत्काल हो सकते हैं। ऐसा करने के लिए, हमें सर्वप्रथम अपनी हीन भावना को दूर करना चाहिए। आइए हम स्वयं को खोलें और कहें, “मैं भी बुद्ध बन सकता हूँ; मैं विश्व के साथ एकीकृत हूँ।” जब हम पुण्डरीक सूत्र में विश्वास करते हैं और उसकी शिक्षाओं का अभ्यास करते हैं, तो हमारे अंदर आत्मविश्वास बढ़ जाता है। जब आपको पीड़ायें होती हैं, तो कृपया अपने उस पिता का याद करें जो गंदे कपड़े पहन कर पुत्र के साथ गोबर हटाने में लगे हैं।

बुद्ध हमेशा हमारे साथ हैं

Editorial Supervision by Chuo Academic Research Institute

प्रत्येक क्षण को संजोना

मौसम की बहुत सारी बधाईयाँ लें। मैं आपको नववर्ष की बहुत सारी शुभकामनायें देता हूँ।

जब हम नव वर्ष के आगमन का स्वागत करते हैं, तब हमें अजीब सा लगता है कि हमारा दिल और दिमाग नए सिरे से तरोताजा हो गया है, भले ही पिछले वर्ष से मात्र एक दिन ही बीता है। मुझे यकीन नहीं है कि हमने ऐसा क्या महसूस किया है। लेकिन मुझे लगता है कि हमारे जीवन में ऐसा एक मोड़ आ गया है, जो महत्वपूर्ण है। प्रसिडेण्ट निचिको निवानो ने अपनी पुस्तक 'कल्टिवेटिंग द बौद्ध हार्ट' में लिखा है, "हर पल नया है, और हर दिन आपके जीवन का पहला दिन है, पुन: नहीं लौटेगा। आज विश्व की सृष्टि के बाद का पहला दिन है - आज के दिन की तरह अद्भुत, दूसरा नहीं हो सकता है" (Kosei Publishing, 2008, p. 40)।

हर दिन हम एक निराला, नया जीवन जीते हैं। लोगों के साथ कोई मुठभेड़ होना इसलिए हमारे लिए पहला और अंतिम है।

नववर्ष की शुरुआत होने के इस अवसर पर, मैं हमेशा याद दिलाता हूँ कि "वर्तमान" की कद्र करना और हर मुठभेड़ को संजोए रखना है। मैं भी इस वर्ष खुशहाली में, आनन्द से, और उत्साहपूर्वक जीना चाहूँगा।

रेवरेन्ट कोईची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

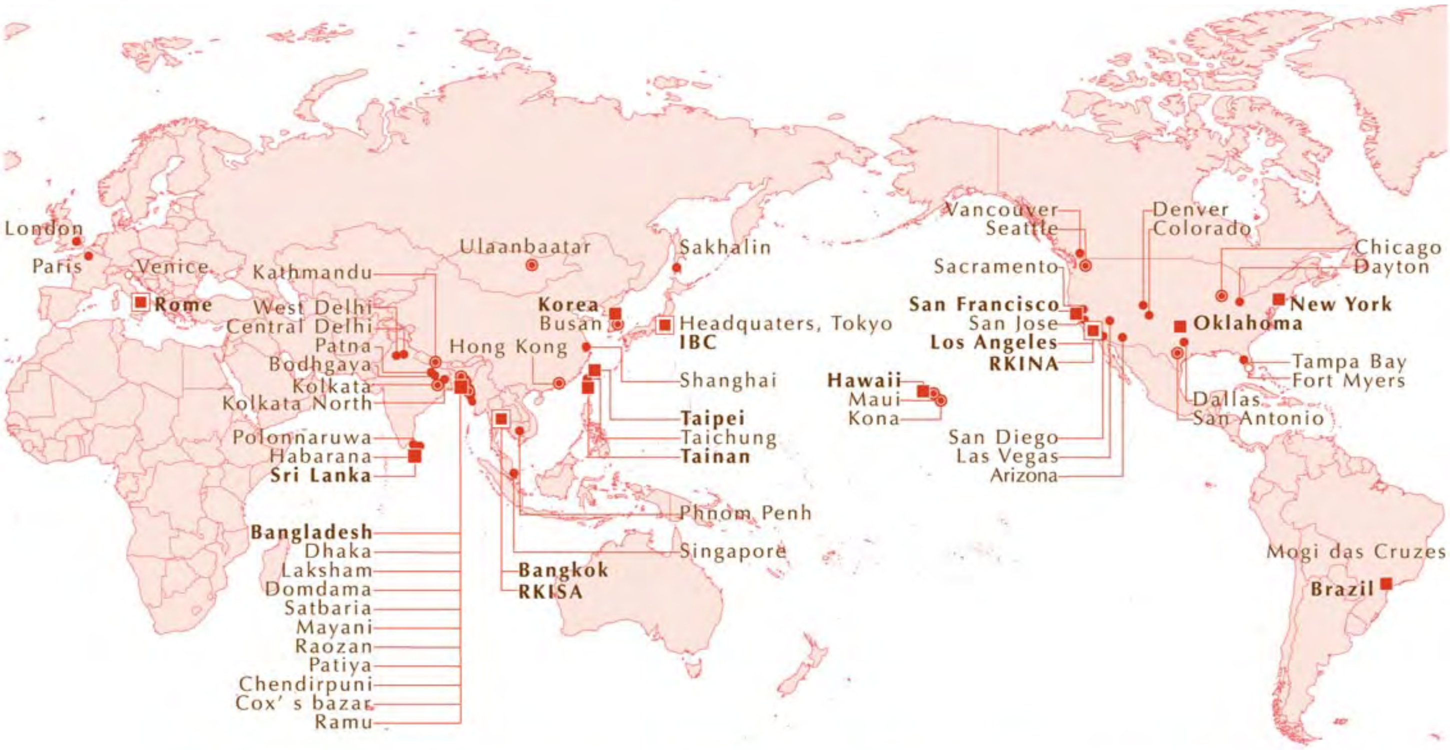

RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

We welcome comments on our newsletter *Living the Lotus*: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai

Overseas Dharma Centers 2018

Rissho Kosei-kai International
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A
Tel: 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way,
WA 98003 U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, USA
Tel: 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay
2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927 *e-mail*: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,
HI 96740 U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 *Fax:* 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
Tel : 1-773-842-5654 *e-mail:* murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver
1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei
4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District,
Taipei City 100 Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Taichung

Rissho Kosei-kai of Tainan
No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701 Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK
Rissho Kosei-kai of Venezia
Rissho Kosei-kai of Paris

International Buddhist Congregation (IBC)
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

Rissho Kosei-kai of South Asia Division
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi
66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka, New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center
Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center
Rissho Kosei-kai of Singapore

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka
House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani
Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax*: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai